श्रील गुरुदेव का माता के प्रति स्नेह

(श्रील भक्ति विबुध बोधायन गोस्वामी महाराज)

श्रीधाम मायापुर स्थित श्रीगोपीनाथ गौड़ीय मठ प्रतिष्ठान के प्रतिष्ठाताचार्य नित्यलीला प्रविष्ट ॐ विष्णुपाद श्रीश्रीमद्भक्ति प्रमोद पुरी गोस्वामी ठाकुर की जन्मलीला से प्रारम्भ कर, यदि हम उनकी अन्यान्य सभी लीला, जैसे दीक्षा एवं अन्य भौम लीलाओं का दिग्दर्शन करेंगे, तब हम गुरुदेव की माता के प्रति प्रीति की ओर लक्ष्य कर पायेंगे।

इस पृथ्वीपर पर विचक्षण (बुद्धिमान) लोग भूमि देवी को माता के रूप में सम्बोधित करते हैं। जीव मात्र ही इस भूमिमाता के ऊपर जन्म ग्रहणकर, उन्हें गुरु रूप में वरण कर, मृत्यु पर्यन्त तक उनपर निर्भर हो अपना जीवन धारण करते हैं।

अनन्त कोटि विश्व ब्रह्माण्ड सृष्टि के मूल पुरुष—स्वयं भगवान् गोलोकबिहारी श्रीकृष्ण हैं। हम श्रीचैतन्य चरितामृत से यह जान पाते हैं—

एक कृष्ण—सर्वसेव्य, जगत ईश्वर।
आर यत सब,—ताँर सेवकानुचर॥
सेइ कृष्ण अवतीर्ण—चैतन्य-ईश्वर।
अतएव आर सब,—ताँहार किंकर॥

(चै.च.आ—६.८१-८३)

अर्थात्, श्रीकृष्ण ही एकमात्र सबके सेव्य एवं जगत के ईश्वर हैं। अन्य सब उनके सेवक अनुचर हैं। वे श्रीकृष्ण ही श्रीचैतन्य महाप्रभु के रूप में अवतीर्ण हुये हैं, अतएव अन्य सब उन्हीं के दास हैं।

इसका अर्थ हुआ कि भूमिदेवी स्वयं भगवान् की लीला पूर्ण करने के उद्देश्य से जीव को आश्रय प्रदान करती हैं। जीव मात्र ही स्वयं भगवान् श्रीकृष्ण का दास है। यही श्रीकृष्ण ब्रह्मा के एक दिन में सातवे मन्वन्तर के २८वें चतुर्युग के द्वापरयुग में अवतरित होते हैं। इसी द्वापरयुग की लीला को समाप्तकर कलियुग में श्रीकृष्ण चैतन्य महाप्रभु अवतीर्ण होते हैं। स्वयं भगवान् श्रीकृष्ण और श्रीकृष्ण चैतन्य महाप्रभु की कृपा के घनीभूत मूर्त्ति स्वरूप हैं—श्रीगुरुदेव और शुद्ध

वैष्णवगण। किन्तु यदि शास्त्र सिन्धु का मन्थन करेंगे तब हम यह निश्चित रूप से जानेंगे कि श्रीगुरुदेव श्रीकृष्ण के प्रतिनिधि स्वरूप हैं। यद्यपि हम यह जानते हैं कि श्रीगुरुदेव श्रीकृष्ण के प्रतिनिधि हैं, किन्तु वास्तव में वे श्रीकृष्ण की आनन्द दायिनी शक्ति स्वरूपा श्रीमती राधारानी के ही प्रतिनिधि हैं। पूर्व आलोचना के अनुसार हम निर्विवाद रूप से यह घोषणा कर सकते हैं—गुरु-वैष्णव और समस्त देव-दवी श्रीमती राधारानी के प्रतिनिधि के रूप में ही भगवान् श्रीकृष्ण का दासत्व करते हैं।

श्रीदुर्गादेवी श्रीराधारानी की प्रतिनिधि स्वरूपा हैं, जिन्हें स्वयं श्रीब्रह्मा अपने ग्रन्थ *श्रीब्रह्मसंहिता* में श्रीराधारानी के छाया स्वरूपा के रूप में सम्बोधन करते हैं। इन्हीं श्रीदुर्गादेवी की पूजा को बंगाली लोग और अन्य भारतवासी लोग महाधूम-धाम सहित नवरात्रि उत्सव के रूप में मनाते हैं। इन्हीं नवरात्रि के मध्य चर्तुथी तिथि पर प्रातः काल के समय (भोर भेला में) पिता तारिणीचरण चक्रवर्ती और माता रामरङ्गिनी देवी को अवलम्बन कर, वर्तमान बंगलादेश के यशोहर ज़िले के गङ्गानन्दरपुर ग्राम में, श्रील भक्ति प्रमोद पुरी गोस्वामी ठाकुर ने इस भूमि माता के ऊपर जन्मलीला ग्रहण की। जन्म के पश्चात् माता पिता ने आदर सहित शिशु का नाम रखा—'प्रमोद भूषण चक्रवती'।

इन्हीं दुर्गादेवी का परिचय देते हुए श्रीब्रह्मा लिखते हैं—

सृष्टिस्थितिप्रलयसाधनशक्तिरेका
छायेव यस्य भुवनानि विभर्ति दुगा।
इच्छानुरूपमपि यस्य च चेष्टते सा
गोविन्दमादिपुरुषं तमहं भजामि॥

(श्रीब्रह्मसहिंता—५.४४)

अर्थात्, "मैं, आदिपुरुष उन श्रीगोविन्द भगवान् का भजन करता हूँ कि, संसारकी उत्पत्ति, रक्षा एवं प्रलय करने की साधन शक्तिस्वरूपा अतुलनीय दुर्गादेवी, जिन गोविन्द की छायाकी तरह अनुगत होकर, अनेक ब्रह्माण्डों का भरणपोषण करती रहती हैं, तो भी वह दुर्गादेवी स्वतन्त्रता के व्यवहार को छोड़कर, जिन गोविन्द की इच्छाके अनुसार ही चेष्टा करती हैं।"

इसका अर्थ हुआ कि आदिपुरुष स्वयं भगवान् श्रीकृष्ण (श्रीगोविन्ददेव) की स्वरूप शक्ति श्रीमती राधारानी की इच्छा के अनुयायि होकर श्रीदुर्गादेवी (श्रीमती राधारानी

की छाया स्वरूपा) इस प्रापञ्चिक भूमि का सृष्टि–स्थिति–प्रलय साधित करती हैं। इस सम्बन्ध में पद्म पुराण में यह वर्णन आता है—

हरिरेव सदाराध्यः सर्वदेवेश्वरेश्वरः।
ईतरे ब्रह्मारुद्राद्या नावज्ञेयाः कदाचन॥

अर्थात्, सभी देव–देवी के आराध्य स्वयं भगवान् श्रीकृष्ण (श्रीहरि) एकमात्र सबके आराध्य हैं। तभी ब्रह्म–रुद्रादि सहित अन्यान्य किसी भी देव–देवी की अवज्ञा करना उचित नहीं।

स्वयं भगवान् श्रीकृष्ण सभी के आराध्य हैं। शास्त्र सिद्धान्त के अनुसार यही श्रीकृष्ण कलियुग में श्रीराधारानी का भाव और कान्ति लेकर इस धराधाम में श्रीकृष्णचैतन्य महाप्रभु के रूप में स्वपार्षद सहित आविर्भूत हुए। श्रीराधारानी के भाव और कान्ति स्वरूप श्रीकृष्णचैतन्य महाप्रभु के घनीभूत–मूर्तिस्वरूप श्रील भक्तिसिद्धान्त सरस्वती गोस्वामी ठाकुर प्रभुपाद हैं। परमार्थ जगत में श्रील प्रभुपाद भक्तिसिद्धान्त, तप्तकाञ्चन वर्णधारी, तारावली वस्त्र (तारों से जड़ित नील वस्त्र) धारणकारी, गानसेवा में परायण, 'नयनमणि मञ्जरी' नाम से परिचित हैं। इन्हीं नयनमणि मञ्जरी की नित्य सेविका हैं—'पलाश मञ्जरी'। परमार्थ जगत में १२ वयस की तप्तकाञ्चन वर्णधारी, लाल–पीला वस्त्र धारणकारी, पुष्पचयन सेवा में नियुक्त, वही 'पलाश मञ्जरी' 'नयनमणि मञ्जरी' की गान सेवा में सहायता के लिये वर्ष १८९८में १९ अक्टूबर (बंगाली तालिका के अनुसार १३०५, द्वितीय कार्तिक) को इस धराधाम में नवरात्रि के मध्य में आविर्भूत हुईं।

इन्हीं श्रीदुर्गामाता के परिवार के मध्य में आते हैं श्रीशिव, श्रीगणेश और श्रीकार्तिक। हम यह जानते हैं कि दुर्गामाता का वाहन पशुओं का राजा सिंह है, शिवठाकुर का वाहन बैल और उनके गले में गुरुदेव संकर्षण के शेषस्वरूप अनन्तनाग विराजमान हैं, श्रीगणेश का वाहन चूहा और श्रीकार्तिक का वाहन मयूर है। बुद्धिमान लोग यह भली–भाँति विचार कर पाते हैं कि यद्यपि इस परिवार के सभी वाहन एक दूसरे के आहार (खाद्य श्रृंखला के अनुसार) स्वरूप हैं, फिर भी सहयोग सहित एक दूसरे के साथ निवास करते हैं। उदाहरण स्वरूप, बैल सिंह का, चूहा साँप का और सर्प मयूर का भोजन है। वास्तव में, श्रीदुर्गामाता और श्रीशिव भगवान् के शुद्ध भक्त हैं; श्रीदुर्गा वैष्णवी और श्रीशिव भगवान् के श्रेष्ठ भक्त, परम वैष्णव हैं। चूँकि इस परिवार के सभी लोग परमानन्द सहित श्रीकृष्ण के नामों का कीर्त्तन करते हैं, इनके परिवार में किसी प्रकार की अशान्ति नहीं

है। इसी नवरात्रि के मध्य में श्रीशिव-दुर्गा के प्रसाद के रूप में शान्ति के प्रतिमूर्ति स्वरूप श्रीप्रमोद भूषण ने जन्म ग्रहण किया।

इन्हीं श्रीप्रमोद भूषण के पड़ोसी थे, श्रील भक्तिविनोद ठाकुर के सतीर्थ—श्रील भक्ति रत्न ठाकुर। समय-समय पर कुछ विशेष सेवा लेकर श्रील भक्तिविनोद ठाकुर श्रील भक्ति रत्न ठाकुर से भेंट करने आते। इस प्रकार, अपने भाग्य से श्रीप्रमोद भूषण को श्रील भक्ति विनोद ठाकुर के दर्शन का सौभाग्य प्राप्त हुआ। क्रम से, श्रील भक्ति रत्न ठाकुर की कृपा से, श्रीप्रमोद भूषण को श्रील भक्ति विनोद ठाकुर द्वारा रचित ग्रन्थों को अध्ययन करने का सुयोग प्राप्त हुआ। सन् १८९८ में श्रील भक्तिविनोद ठाकुर के अप्रकट लीला के पश्चात् श्रील भक्ति रत्न ठाकुर की अनुप्रेरणा से श्रीप्रमोद भूषण सन् १९१५ में श्रील गौर किशोर दास बाबाजी महाराज जी के अप्रकट लीला प्रकाश के दिन ही श्रीविमला प्रसाद प्रभु (श्रील भक्ति सिद्धान्त सरस्वती ठाकुर प्रभुपाद का ब्रह्मचारी नाम) के दर्शन लाभ करने के लिये श्रीधाम मायापुर आएँ। ऐसा प्रतीत हुआ मानो नयनमणि मञ्जरी ने गान सेवा में सहायता करने हेतु श्रीराधारानी की पलाश मञ्जरी को प्रेरित किया। प्रथम दर्शन में ही श्रीप्रमोद भूषण ने श्रीविमला प्रसाद को गुरु रूप में हृदय में वरण कर लिया। किन्तु श्रीराधारानी की इच्छा द्वारा ही श्रीकृष्णकी सेवा सम्भवपर है। इसीलिये, श्रीराधारानी की इच्छा से सन् १९१७ में श्रीविमला प्रसाद कठोर व्रत अवलम्बन कर श्रीशची के आङ्गन (श्रीधाम मायापुर स्थित योगपीठ) में अवस्थान कर रहे थे। उसी समय एक दिन मध्याह्न में पुनः श्रीप्रमोद भूषण श्रीविमला प्रसाद के दर्शन के लिये वहाँ उपस्थित हुए। बंगाली संस्कृति के अनुसार यदि कोई अतिथि मध्याह्न में आता है, तो अवश्य ही उसे भोजन कराना चाहिए। किन्तु मध्याह्न का प्रसाद कुछ भी शेष नहीं रह गया था। तभी श्रीविमला प्रसाद की माता श्रीमती भगवती देवी योगपीठ में अवस्थान कर रही थीं। श्रीप्रमोद भूषण को मध्याह्न में भूखे अवस्था में रखना ठीक नहीं, यह विचारकर श्रीमती भगवती देवी ने स्वयं ही अपने हाथों से भोजन रन्धन किया, भक्तिभाव सहित भगवान् को भोग अर्पण किया और तत्पश्चात् श्रीप्रमोद भूषण को प्रसाद परिवेशन किया। हम यह जानते हैं कि श्रीदुर्गादेवी का एक और नाम है—श्रीभगवती देवी। यहाँ पर अन्य दृष्टिकोण से यह विचार आता है कि श्रीदुर्गामाता ने, श्रीविमला प्रसाद की माता श्रीभगवती देवी का रूप धारणकर, स्वयं ही रन्धन कर श्रीप्रमोद भूषण को भोजन कराया।

उसके बाद, सन् १९२१ से आरम्भ हुआ श्रीप्रमोद भूषण का त्यक्ताश्रम। कुछ दिन

पूर्व ही श्रीविमला प्रसाद को 'श्रील प्रभुपाद' की उपाधि से विभूषित किया गया और जगत में वे आदर के पात्र बनें। सन् १९२३ में जन्माष्टमी तिथि को लक्ष्य कर, श्रील प्रभुपाद ने श्रीप्रमोद भूषण को मन्त्र-दीक्षा प्रदान की और उनको 'श्रीप्रणवानन्द दास ब्रह्मचारी' के नाम से भूषित किया। श्रीप्रणवानन्द प्रभु की माता श्रीरामरङ्गिनी देवी का उनके प्रति स्नेह-आकर्षण विस्मयकारी था। बीच-बीच में पूर्वाश्रम से श्रीप्रणवानन्द की माता श्रीरामरङ्गिनी देवी पत्र भेजती थीं। श्रील प्रभुपाद उन पत्रों को सबसे पहले पढ़ते थे और सभी के सामने यह कहते थे—"प्रणवानन्द की माँ जिस भाव से पत्र लिखती हैं, उसे पढ़कर मेरे नेत्रों से भी अश्रु प्रवाहित होते हैं। यदि प्रणवानन्द पढ़ेगा तो क्या होगा, यह मैं समझ नहीं पा रहा।"

श्रीप्रणवानन्द दास ब्रह्मचारी के प्रति श्रील प्रभुपाद अर्थात् नयनमणि मञ्जरी का स्नेहाकर्षण, श्रीदुर्गामाता का स्नेहाकर्षण, श्रील प्रभुपाद की मातृदेवी श्रीमती भगवती देवी का स्नेहाकर्षण एवं माता श्रीमती रामरङ्गिनी देवी का स्नेहाकर्षण, हम सभी को यह बोध कराता है कि श्रीप्रणवानन्द प्रभु अर्थात् श्रील गुरुदेव का माता के प्रति प्रीति ही वास्तविक परिचय है।

मैंने स्वयं अपने नेत्रों से यह देखा और सुना है कि यदि कोई बालिका अथवा महिला श्रील गुरुदेव के निकट आती थीं, तो सभी को वे 'मा' कहके सम्बोधन करते थे। वर्तमान वैष्णव जगत में श्रील गुरुदेव द्वारा आचरित सभी आदर्श, विशेष रूप से महिलाओं के प्रति श्रील गुरुदेव की जिस प्रकार दृष्टि-भंङ्गि होती थी, यदि उसे हम अपने जीवन में थोड़ा सा भी पालन कर पायेंगे, तो अवश्य ही हम श्रीकृष्णचैतन्य महाप्रभु के निर्देशानुसार जड़ भोगासक्ति को दूरकर स्वयं भगवान् श्रीकृष्ण की सेवा-आसक्ति में प्रतिष्ठित हो पायेंगे। यदि हम अहंकार का परित्याग कर (कर्ता का अभिमान) यही श्रीकृष्णसेवा-आसक्ति को चित्त में अर्थात् हृदय में, मन और बुद्धि में, स्थापित करेंगे, तो निश्चित रूप से हमारा परमार्थ जीवन सफल हो जायेगा। अर्थात् इस जड़ जगत में उद्धार लाभकर, परमार्थ जगत में श्रीराधारानी की सखियों के आनुगत्य में गुरुगणों के अनुरूप मञ्जरी स्वरूप लाभकर, श्रीमती राधारानी की नित्य दासी बनने की योग्यता प्राप्त होगी।

"धामेर स्वरूप स्फूरिबे नयने, हइब राधार दासी"
अर्थात् गोलोक धाम में श्रीराधारानी की दासी होने का सौभाग्य लाभ करना ही हमारा चरम पुरुषार्थ है।